जनकाव्य की चेतना के कवि त्रिलोचन

डॉ रुपाली सारये*

सारांश :-

त्रिलोचन जनकाव्य के धनी थे। प्रकृति और ग्रामीण चेतना उनकी कविताओं की धड़कन है। 'नगई' 'महरा' 'चंपा काले अच्छर नहीं चींन्हती' 'परदेसी के नाम पर' 'सचमुच इधर तुम्हारी याद' जैसी कविताओं में ग्रामीण एवं नगरी जीवन के परिवेश के प्रक्रिया देखे जा सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि दोनों ही जीवन परिपाटी की बोध अभिव्यक्ति आपके काव्य में दिखाई पड़ती है।

कुंजी शब्द :-

त्रिलोचन, प्रकृति, ग्रामीण चेतना, नगई, महरा, परदेसी, अभिव्यक्ति, कवि, करुणा, प्रेम, संवेदना।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि "कवि में करुणा और प्रेम का विशिष्ट भाव होना चाहिए।" साथ ही जो मनुष्य हृदय को जानकर उन संवेदनाओं को अपना समझे वही सच्चा कवि है। त्रिलोचन भी इन्हीं संदर्भों के आलोक में अपना काव्य रचते हैं। लोक जीवन लोकतंत्र की पहचान उनके काव्य में प्रस्तुत हुआ है। त्रिलोचन की साहित्य सृजन में गांव कस्बा दुख दर्द की सहानुभूति है वह ग्रामीण नैसर्गिकता का सहज बखान करते हुए कहते हैं कि -

प्रिय लगती है बहुत,घमौनी घाम देखकर,
लोग कहीं जमते हैं, गाएं और बकरियां,
खड़ी धूप में मौज लिया करती है सर्दी,
इस तरह जाती है घर से मीन-मेखकर,
आती है महिलाएं आती है सुंदरिया,
कुत्ते करते रहते हैं आवारा गर्दी,[1]

---

*सहायक प्राध्यापक हिंदी तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

[1]चिंतामणि: रामचंद्र शुक्ल - भाग - 1 पृ 151

यह जो ग्रामीण परिवेश है इसकी हम शहर में कल्पना भी नहीं कर सकते घमोनी का आनंद गांव में जैसा कहीं ओर नहीं,समूह बनाते लोग और चौक पर उनकी बातें , कुंए-पोखर पर मीन-मेख निकालती स्त्रियों के जमघट, गांव में बकरियां कुत्ते सभी जानवर भी उन्मुक्त है फिर भी सब में आत्मीयता है ,जीवन का आनंद है। एक जगह वह कहते हैं कि

"फूले है पलाश, सेमल, गुलाब, बनबेला
जामुन, नीम, लिसोढ़े। अभिनव दल आए हैं
पीपल-पाकड़ में।"

स्पष्ट है कि गांव का किसान मजदूर पशुओं, वृक्ष ,लताओं से भरपूर होता है किसान जीवन कितना कठिन होता है लोगों और पशुओं का पारस्परिक सहयोग जीवन से वर्णन जुदा होता है कहीं-कहीं कवि लोकगीतों के प्रभाव में रचना करते हैं एक उदाहरण दृष्टि में है

"नव जीवन के बीच, धरातल की हरियाली
हो दिन दूनी रात चैगुनी रहने वाली।"
"ठोक बजाकर देख लिया,
कुछ कसर न छोड़ी
दुनिया के सिक्के को बिल्कुल खोटा पाया।"

अपनी रचना क्षमता के कारण उनके काव्य संसार व्यापक दृष्टिकोण लिए हुए हैं। प्रकृति और जीवन दोनों की ओत-प्रोत भावनाओं को जोड़े हुए हैं। जनकवि होने के साथ-साथ वह कहीं-कहीं लोकाभिव्यक्ति भी करते हैं परंतु आधुनिक भावबोध। कसे हुए शब्दों में बहुत कुछ समझ लेने की क्षमता दिखाई देती है।

अभी हुक्के पुड़ पुड़,
बजे,उठा कर धूम,रंग आंखों में आया,
हंसिए में उत्साह,नया पहंटा वह सलटा,
कुछ मालूम हुआ न, उधर से गीत कढ़ाए
मजदूरिनों ने आम और मद से बौराया
कटहल की अरघान घड़ी

वर्तमान में वैज्ञानिक आविष्कार और आधुनिकता के बाद भी मनुष्य ईश्वर प्रकृति को अपना परिवार समझता है आकाश पिता के समान नदी को मां कहता है। गंगा मां के स्नान करने मात्र से पापों का क्षय होता है ऐसी प्रथाओं के चलते इसी लोक आस्था लिए हैं। गंगा मैया श्रद्धा और विश्वास की भावना लोक में अधिक बलवती होती दिखाई देती है। कभी-कभी यह विश्वास अंधविश्वास का रूप भी ले लेता है मानव का स्वभाव भी है कि वे युगों से होती क्रियो का अनुकरण करता है। ध्यान देने योग्य बात है कि पढ़े-लिखे लोगों के लिए भी अंधविश्वास पर्याप्त रूप में विद्यमान होता है। एक जगह वह कहते हैं -

"पढ़ना हमारे नहीं सहता पर बात मेरी कौन यहां सुनता है।
रान परोसी कहते हैं लड़का इन्हें भारी है , इसी राह खो रहे हैं।
पढ़ लिखकर ही आखिर फालने विक्षिप्त हुए।
पढ़ते-पढ़ते तीन चार जने मर गए।

अब ऐसा कहां होता है कि पढ़ने लिखने से किसी की मृत्यु हो जाए या वह विक्षिप्त हो जाए पर ईर्ष्या, द्वेष,अंधविश्वास के चलते गांव में ऐसे प्रसंग है आम है।लोक की बात हो और प्रकृति का प्रसंग ना हो ऐसा कैसा संभव है।त्रिलोचन जब बसंत वर्णन करते हैं तो पौधे की नवदल, आम की बौर,कोयल की कूक, पलाश के फूलों सभी की अगवानी पता चलती है। वैसे तो सभी कवि इन उपादानों के विषय में बोलते हैं परंतु इस वर्णन के साथ ग्राम की चौपाल की चर्चा भी वह करते जाते हैं वह कहते हैं-

"चौपाल की लहर में बोल-डोल के उठे।
गांवों ने फाग गाकर कहा आ गया वसंत।।"

किसान को बसंत का आनंद तब और बढ़ जाता है जब वह देखता है की फसल तैयार है क्योंकि हर त्यौहार-ऋतु खेती किसानी से ही जुड़े होते हैं। यह सभी उसका जीवन है और एक स्थान पर कवि कहता हैं-

" चैती अब पककर तैयार है, खेतों में रंग बदल गए हैं।
मटर उखड़ रही है, गेहूं जौ खड़े हैं ,हवा में झूम रहे हैं।
हवा की लहरों पर धूप का पानी चढ़ जाता है।
फूले है पलाश, वैजयंती, कचनार, आम। चिर्लाबल अब
कंकड़ है , पीपल, शिरीष, नीम का भी यही हाल है।

स्पष्ट है कि यहां लोग जीवन को प्रकृति के माध्यम से देखने का प्रयास हुआ है किस की भावनाएं समझने के लिए हमें उसे परिवेश और माटी से जुड़ना होगा इन अनुभवों के वर्णन में कहीं-कहीं उपदेश भी दिखाई देते हैं परंतु योगेश कहीं ना कहीं रूढ़िवादी भावना देश के विकास में अवरोध बन जाते हैं। हमें आगे बढ़ाने के लिए बहुत से आप पुरातन परिवर्तित करना होगा जिससे व्याप्त बुराइयों का अंत होने लगेगा। वर्तमान में आवश्यकता है नए युग में नए विचारों की।यही कारण है कि कवि कहते हैं-

"ये नए युग से अपरिचित और सशंकित
ये गए सब दिन सताए
चल रहे प्राचीनता से लौ लगाए
एक अपनी ही नई दुनिया बसाए
आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही
भा रही है भा रही है भा रही है।"

यहां कभी अंधविश्वास की चली आ रही परंपराओं के प्राचीन रूप से सचेत कर रहा है और कह रहा है कि हमें पुरातन को बदलने की आवश्यकता है। कवि कर्मों और उससे मिलने वाले फल की भी बात करता है कभी आध्यात्मिक है वह धर्म को जानता है संस्कृति को मानता है परंतु जो गलत है उसको स्वीकार नहीं करता कवि कहते हैं मनुष्य को अपनी तपस्या का पुण्य अवश्य प्राप्त होता है इसलिए त्रिलोचन श्रम और संघर्ष की बात करते हैं-

धूप कठिन सर -ऊपर, थम गई हवा है जैसे
दोनों दूजो के ऊपर,रख पैर खींचते पानी,
उसे मलिन हरी धरती पर, मिलकर वे दोनों पानी
दे रहे हैं खेत में पानी।

जीवन का महत्वपूर्ण पहलू श्रम है जो संघर्ष के बिना संभव नहीं धरती के प्रति अपने स्नेहा को सौंदर्य श्री हार्दिक जी कभी कहते हैं जब देखे तब पे दूरियां जिन्हे जाने के खेत का खेत का मन श्रमजीवी कभी शम से नहीं घबराते उनके लिए स्वयंवर संघर्ष जीवन की अनिवार्यता है दोनों के काम बाते हैं फिर भी एक दूसरे का सहयोग करते हैं त्रिलोचन की कविता के संघर्ष पत्र नगर निराहिनी केवट निषाद सनी ही सब्जी वाला बुढ़िया जैसे कई चरित्र के सामने लोगों की स्थिति को दर्शाते हैं।

निष्कर्षः -

त्रिलोचन अपनी काव्य रचनाओं में कोई भी बात स्पष्ट रूप में बयां करते थे। बातों को घूमाकर कहना उनकी आदत में नहीं था। यथार्थ का अंकन ही उनकी विशेषता है वह कहते हैं-

"कोई भूखा हो तो उसको ला कर रोटी
दो, मत लंबी चौड़ी बात बनाओ इसकी उसकी।"

किसी ने सही कहा है कि त्रिलोचन साहित्य के हनुमान है। इन कि राजनशीलता से बात सत्य प्रतीत होती है। सहजता के साथ-साथ फक्कड़ स्वभाव और समाज के गरीब टपके के प्रति संवेदनशीलता इनको महनीय बनाती है। इनके इसी स्वभाव के कारण सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं -

"त्रिलोचन जिस खास अर्थ में आधुनिक हैं, वह यही गरीबी से उनकी कविता का नाता है। नयी कविता ने अपने लिए जो परिधि बनाई, उसने जनता के दुख- दर्द को उससे बाहर रखा। त्रिलोचन की कविता इस परिधि को तोड़ती है।

स्पष्ट कहा जाए तो भाषा की दृष्टि से हिंदी को समृद्ध करने का श्रैय त्रिलोचन को दिया जाएगा। उन्होंने देशज शब्दों को साहित्य गरिमा के आवरण में समेटा है।

<u>संदर्भ सूची</u>:

1.

2. बात मेरी कविता: त्रिलोचन, पृष्ठ क्रमांक - 22
3. त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक-ध्रुव शुक्ल पृ - 094
4. त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक-ध्रुव शुक्ल पृ0 - 77।
5. वही पृष्ठ क्रमांक - 52
6. अरधान -त्रिलोचन शास्त्री यात्री प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक - 58
7. धरती पृष्ठ क्रमांक - 82
8. गुलाब और बुलबुल पृष्ठ क्रमांक - 56
9. चैती पृष्ठ - 48
10. धरती पृष्ठ क्रमांक - 25
11. धरती पृष्ठ क्रमांक - 18
12. उस जनपद का कवि हूँ -
13. त्रिलोचन के बारे में, रामविलास शर्मा का लेख, त्रिलोचनः आधुनिक और परंपरा बोध, पृ.55.